तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. जी.एन. सिंह एवं श्री गॉव लेविन

शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए प्रो. के.आर.सी. रेड्डी एवं शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. मायराम उनियाल

दिनांक : 12 जनवरी, 2025। आयुर्वेद योग नाथपंथ–2025 पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा 12–14 जनवरी 2025 तक विश्वविद्यालय परिसर, आरोग्यधाम, बालापार, सोनबरसा में परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज, माननीय मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलाधिपति के आशीर्वाद से किया जा रहा है।

इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में देश भर के साथ–साथ श्रीलंका, इजराइल, यूके, यूएसए और अन्य देशों से गणमान्य लोगों ने भाग लिया। आज दिनांक 12 जनवरी 2025 को उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. जी.एन. सिंह, मुख्यमंत्री के सलाहकार, उत्तर प्रदेश सरकार। उद्घाटन सत्र का स्वागत सम्मेलन के आयोजन सचिव एवं गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने किया। उन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज के आशीर्वाद से इस ज्ञानवर्धक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन संभव हो पाया है। उन्होंने देश–विदेश से आए सभी गणमान्यों का स्वागत किया।

इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में करीब 300 पंजीकरण हुए। उन्होंने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय 52 संस्थानों में से महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की एक घटक इकाई है। सम्मेलन के संयोजक और बीएचयू के वरिष्ठ प्रोफेसर प्रो. के.आर.सी. रेड्डी ने नाथ संप्रदाय और आयुर्वेद व योग में गोरक्षनाथ के योगदान पर अपने विचार रखे। उन्होंने इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन, वेब ऑफ साइंस इंडेक्स्ड जर्नल में प्रकाशित 45 शोध लेखों को शामिल करते हुए कार्यवाही की सराहना की।

उन्होंने कहा कि यह पहला मौका है जब वैज्ञानिक प्रकाशनों के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया है। मुख्य अतिथि डॉ. मायाराम उनियाल, वनौषधि विद्यापति (श्रीलंका) ने गोरक्षनाथ और गोरखपुर के बीच समानता को समझाया। वेद वाणी और नाथपंथ संप्रदाय एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि गोरक्षनाथ जी ने पारे के उपयोग से संबंधित कई संदर्भ दिए हैं। पारे का उपयोग निम्न धातुओं को बहुमूल्य स्वर्ण धातु में बदलने के लिए किया जाता है

और पारद वटी खेचरी (रस बंधन) के रूप में काम किया जाता है। आयुर्वेद और योग में गोरक्षनाथ जी का योगदान अद्वितीय है। उन्होंने मत्स्येंद्रनाथ, नागार्जुन, गोरक्षनाथ जी महाराज की परंपरा को संबोधित किया है।

मुख्य अतिथि, इज़राइल से श्री गाय लेविन ने संबोधित किया कि उन्होंने आयुर्वेद में अपना घर पाया है, उन्होंने समय–समय पर आयुर्वेद बिरादरी का समर्थन किया है और इज़राइल में अपने ज्ञान को बढ़ाया है। वह योगयुक्त शिलाजीत विकसित करते हैं। वह योगाभ्यास और जोंक चिकित्सा का अभ्यास कर रहे हैं। रोगी स्ट्रोक से पीड़ित था, उन्होंने इज़राइल में बस्ती चिकित्सा का उपयोग करने की सलाह दी।

विशिष्ट अतिथि, डॉ. अनुला कुमारी, श्रीलंका श्रीलंका में एक आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं। आयुर्वेद जीवन शैली और चिकित्सा की एक आदर्श प्रणाली है। आयुर्वेद–योग–नाथपंथ पूरे विश्व में फल–फूल रहा है। उन्होंने आयुष के क्षेत्र में भारत और उत्तर प्रदेश सरकार की पहल को प्रस्तुत किया और शेयर धारकों को अपने निवेश के लिए आमंत्रित किया।

इस सत्र में डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलपति, एमजीयूजी, डॉ. प्रदीप कुमार राव, रजिस्ट्रार, एमजीयूजी, प्रो. के.आर.सी. रेड्डी, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक और आयुर्वेद संकाय, आईएमएस बीएचयू के वरिष्ठ प्रोफेसर और डॉ. गिरिधर वेदांतम, प्रिंसिपल और संगठन सचिव, जीजीआईएमएस मौजूद रहे।

इस अवसर पर डॉ. अरविंद कुशवाहा, प्राचार्य, एमबीबीएस कॉलेज, डॉ. शशिकांत सिंह, प्राचार्य, फार्मास्यूटिकल साइंसेज संकाय, डॉ. विमल कुमार दुबे, डीन, कृषि संकाय, डॉ. सुनील कुमार सिंह, डीन, स्वास्थ्य और संबद्ध विज्ञान और विश्वविद्यालय के सभी संकाय मौजूद रहें।

सम्मेलन में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. टी. वीरसला, एवं डॉ. वी.एन. जोशी

सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए प्रो. बी.एम. सिंह एवं आभासीय माध्यम से शोधार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. जी.एस. तोमर

दिनांक : 12 जनवरी, 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर अन्तर्गत गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान (आयुर्वेद संकाय), महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा 'आयुर्वेद–योग –नाथपंथ' पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन–2025 का आयोजन 12–14 जनवरी 2025 तक विश्वविद्यालय परिसर, आरोग्यधाम, बालापार, सोनबरसा में किया जा रहा है।

इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में देश भर से और श्रीलंका, इज़राइल, इंग्लैंड, अमेरिका और अन्य देशों के गणमान्य व्यक्तियों ने सम्मेलन में भाग लिया। पहले विज्ञान सत्र की अध्यक्षता विशिष्ट अतिथि डॉ. टी. वीररत्ना, श्रीलंका और सह–अध्यक्ष डॉ. वी. एन. जोशी, निदेशक, एसोसिएशन आयुर्वेद अकादमी, इंग्लैंड ने की।

डॉ. शेखर अन्नाम्बोतला, अध्यक्ष, एसोसिएशन ऑफ आयुर्वेदिक प्रोफेशनल्स ऑफ नॉर्थ अमेरिका (एएपीएनए), यूएसए संयुक्त राज्य अमेरिका से ऑनलाइन शामिल हुए और 'आयुर्वेद के वैश्विक परिदृश्य' पर सभा को प्रबुद्ध किया। उन्होंने भारत के बाहर आयुर्वेद के दायरेए अवसर और चुनौतियों पर बात की है। उन्होंने स्थानीय आयुष चिकित्सकों के साथ नियमित बैठकों के संबंध में भारत के विभिन्न देशों में आयुष अध्यक्षों का उल्लेख किया है।

उन्होंने यह भी बताया कि 31,772 आयुर्वेदिक सलाहकार विदेशों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं और आयुर्वेद और योग क्षेत्र में आगामी स्नातकों के लिए एक बड़ा अवसर दिखाया है। उसके बादए विश्व आयुर्वेद मिशन, प्रयागराज के अध्यक्ष प्रोफेसर जी.एस. तोमर ने 'स्वास्थ्य देखभाल चुनौतियां और आयुर्वेद (ऑनलाइन)' पर संबोधित किया और कहा कि आयुर्वेद जीवन का एक आदर्श तरीका और चिकित्सा प्रणाली है, आयुर्वेद रोकथाम, संवर्धन और इलाज के लिए है।

प्रो. बी.एम. सिंह, विभागाध्यक्ष, कौमार्यभृत विभाग, आयुर्वेद संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी ने 'बच्चों की प्रतिरक्षा बढ़ाने में स्वर्णप्राशन की भूमिका' पर बात की, उन्होंने बताया कि स्वर्ण प्राशन का उपयोग अधिक वैज्ञानिक है और पूरे भारत में लोकप्रिय है। 0.16 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को स्वर्ण प्राशन ड्रॉप के रूप में दिया जाता है। स्वर्ण प्राशन में 90: स्वर्ण भस्म होती है।

डॉ. चेतन साहनी, एसोसिएट प्रोफेसर, एनाटॉमी विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, गोरखपुर ने पुरुष बांझपन निवारण विज्ञान और समग्र उपचार के लिए योग पर संबोधित किया और विभिन्न रोग संस्थाओं में योग के वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किए। उन्होंने हाल के शोधों का हवाला दिया है 'भारत ने 83 जनसंख्या समूहों से 10,000 मानव जीनोम का संकलन जारी किया है। जिसे पीएम मोदी जी ने मील का पत्थर कहा है। पीएम श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अभी हाल ही में 10 हजार भारतीयों के जीनोम अनुक्रमण डेटा का अनावरण किया।' भृगु योग ट्रस्ट, वाराणसी के डॉ. जयंत कुमार भादुड़ी ने 'भृगु योग परंपरा और ऊर्जा का मार्ग : शरीर, मन और वाणी को पुनर्जीवित करने के लिए' को संबोधित करते हुए कहा कि महर्षि भृगु अथर्वेद काल के ऋषि हैं और उन्होंने इस पर जीवंत अभिविन्यास भी दिया है। एवं अनाहत योग का जीवन्त प्रयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया। सत्र की शोभा मार्गदर्शन मंडल में डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलपति, एमजीयूजी, डॉ. प्रदीप कुमार राव, कुलसचिव, एमजीयूजी, प्रोफेसर के.आर.सी. रेड्डी, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक और आयुर्वेद संकाय, आईएमएस बीएचयू के वरिष्ठ प्रोफेसर और डॉ. गिरिधर वेदांतम, प्राचार्य एवं अंतर्राष्टीय सम्मेलन के सचिव, गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान (आयुर्वेद संकाय) ने रखी। इस अवसर पर एमबीबीएस के प्राचार्य डॉ. अरविन्द कुशवाहा, कृषि विज्ञान संसथान के संकाय प्रमुख डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ. सुनील कुमार सिंह, डीन, हेल्थ एवं अलाइड साइंसेज, डॉ. शशिकांत सिंह, प्राचार्य, फार्मेसी, एवं समस्त अध्यापक गण उपस्थित थे। पहले वैज्ञानिक सत्र में, डॉ. विनम्र शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, जीजीआईएमएस, एमजीयूजी के साथ–साथ, इस पहले वैज्ञानिक सत्र के लिए प्रतिवेदक, बीएचयू के डॉ. सरोज आदित्य राजेश, ने दुनिया भर से आए सभी प्रतिनिधियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया प्रथम वैज्ञानिक सत्र के समन्वयक डॉ. विनम्र शर्मा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन हुआ।